eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

वर्तमान समय की मांगः भारतीय शिक्षा का स्वदेशीकरण

डॉ० प्रशान्त मिश्रा[1]
[1]सहायक आचार्य शिक्षक प्रशिक्षण विभाग कानपुर इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर्स एजुकेशन गंगागंज, पनकी, कानपुर नगर

Received: 15 April 2025 Accepted & Reviewed: 25 April 2025, Published: 30 April 2025

Abstract

आदिकाल से भारत वैदिक संस्कृति, सभ्यता, संस्कार व शिक्षा का केन्द्र रहा है। विश्व के इतिहास पर हम दृष्टि डालें तो पायेंगे कि भारतीय शिक्षा, संस्कृति, सभ्यता व संस्कार के लिए विश्व के लोग भारत आते रहे हैं। विश्व के मंच पर भारतीय राजनीति सामाजिक, साहित्य और शैक्षिक जीवन मूल्यों को प्रचारित किया जाता रहा है। परन्तु हमारे देश पर विदेशी आक्रांताओं ने लगभग 1000 (एक हज़ार) वर्षों तक राज किया जिसके परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षा का उद्देश्य मूल्य व संस्कार में कुछ बदलाव हुआ। इससे राष्ट्रीय व सामाजिक भावना से हट कर हम स्व की भावना में जीने लगे हैं। हमारी शिक्षा को उन आक्रांताओं ने अपनी तरह से परिवर्तन किये, जिसका परिणाम यह रहा कि भारतीय मानव अपने शैक्षिक संस्कारों को भूलकर वह आर्थिक चकाचौंध में फँस गया और अपने शैक्षिक मूल्यों का हनन कर बैठा। यहाँ पर शैक्षिक संस्कार का अर्थ है कि वैयक्तिक, सामाजिक और प्रशासनिक आचार के नियमों से है। इन नियमों को इस प्रकार से प्रसारित किया गया कि कोई भी व्यक्ति इन नियमों को सरलता से तोड़ने में भय खाते थे। शिक्षा के पाश्चात्यीकरण से भारतीय सामाएं असुरक्षित हो गयीं। राज्यों की सीमाएं घटने–बढ़ने लगीं, प्रान्त विभक्त व संयुक्त होने लगे। शासक वंश बदलते रहे और अनेक नये धर्मों और सम्प्रदायों ने जन्म लिया। विरोधी मतों और सिद्धांतों का उदय हुआ, शैक्षिक मूल्यों का हनन हुआ जिसके कारण वर्तमान समय में यह आवश्यक हो गया है कि लेह–लद्दाख से लेकर रामेश्वरम तक, द्वारका से लेकर कामाख्या तक भारतीय समाज को एक सूत्र में बांधने के लिए शिक्षा का स्वदेशीकरण होना चाहिए।

प्रमुख शब्द–आदिकाल, प्राचीन भारत, समाज, संस्कार, जीवन मूल्य, भारतीय शिक्षा, वैदिक संस्कृति, सभ्यता, पाश्चात्यीकरण, स्वदेशीकरण आदि।

Introduction

आदिकाल से भारत संस्कार, संस्कृति और सभ्यता का विश्व में केन्द्र बिन्दु रहा है। उच्च शिक्षा के लिए विश्व भारत की ओर देखता रहा है। विश्व के कई भूभागों से लोग उच्च शिक्षा, साहित्य, संस्कृति इत्यादि के लिए भारत आते रहे हैं। यहाँ कि मिट्टी में रच–बस कर यहाँ के ही हो गये या फिर भारत से संस्कृति, संस्कार व संस्कृति के उच्च मूल्यों को अपने देश में जाकर यहाँ की संस्कारों को अपने देश में प्रचारित करने का कार्य किया है जिससे सम्पूर्ण विश्व में भारत के साहित्य की छाप आज भी देखने को मिलती है। भारत अपने सम्पूर्ण समाज को लेकर आगे बढ़ रहा था तभी कुछ विदेशी आतताइयों ने भारत पर आक्रमण कर कुछ भूभाग पर अपना अधिकार कर लिया और फिर धीरे–धीरे अपने साम्राज्य का विस्तार करने लगा जिससे कुछ तो युद्ध में हारने के कारण या फिर अत्याचार सहन न करने के कारण भारत के भूभाग में रहने वाले लोगों ने भी अपना मन–बेमन से दूसरे समुदाय में जा मिले जिस कारण से भारत की

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

संस्कृति, संस्कार और सभ्यताओं का हनन होने लगा। हमारी साधना, यज्ञों व जंगल में रहने वाले ऋषियों–मुनियों द्वारा बनायी गयी अनुसंधानशालाओं का धीरे–धीरे पतन होने लगा। पृथ्वी व समाज का संचालन करने वाले व्यक्ति (राजा) अपने पथ से भ्रमित हो गया। वह उनके सम्प्रदाय में जा मिले और उनके जैसा आचरण करने लगा, जिससे वह पतित हो गये और धीरे–धीरे शिक्षा, संस्कार और संस्कृति के पक्ष को भूलकर येनकेन प्रकारेण परम स्वार्थी हो गये और उनके गुण गाने लगे, जिसका परिणाम यह हुआ कि संस्कारहीन और चरित्रहीन समाज का निर्माण हुआ। समाज में भारतीय संस्कृति का सभी प्रकार से हनन हुआ और मानव जाति के कर्तव्यों का भी हनन हुआ।

विदेशी आक्रांताओं ने भारत पर राज करने के लिए सबसे सहज और सरल मार्ग यह पाया कि भारत की शिक्षा और संस्कृति पर कुठाराघात किया, शिक्षा का अपभ्रंश किया और संस्कृति का लोप किया, जिसका परिणाम यह रहा है कि यहाँ पर शिक्षा प्रदान करने की भाषा संस्कृत (हिन्दी) से बदलकर फारसी या उर्दू हो गयी। संस्कृति का हनन हुआ, समाज में अनेकानेक बुराइयां उत्पन्न हुईं और भारतीय मानव सभ्यता जो एक कबूतर के लिए अपने शरीर का दान या मानव समाज के हित के लिए अपने शरार का दान देने वालों की थी, उसकी जगह अपनी विलासिता को पूर्ण करने के लिए अपने ही भाई अथवा पिता का मानमर्दन या उन्हें मारने का कुचक्र होने लगा। सबसे अधिक शिक्षा का हनन हुआ जिसके कारण समाज में सामाजिकता समाप्त हो गयी।

वर्तमान समय की यह मांग है कि भारत को ज्येष्ठ और श्रेष्ठ बनाने के लिए पुनः भारतीय शिक्षा का स्वदेशीकरण किया जाये ताकि भारत को फिर से विश्व का सिरमौर बनाया जा सके।

भारतीय समाज में विदेशी शिक्षा का प्रभाव

संस्कृति, संस्कार वाले राष्ट्र में विदेशी आक्रांताओं ने व्यापार की दृष्टि से आक्रमण किये और वे धीरे–धीरे यहीं बस गये और यहाँ पर अपना आधिपत्य जमाने के उद्देश्य से भारत में ही रहने लगे। मुगलों ने भारत पर राज्य करने के लिए सबसे पहले यहाँ की संस्कृति और शिक्षा को केन्द्र बिन्दु बनाकर प्रतिघात करने लगे, जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत योग से भोग की संस्कृति पर चलने को आतुर होने लगा। भारत ने अपना राज्नीतिक ढाँचा ही नहीं, अर्थनीति, शिक्षा प्रणाली, विकास प्रक्रिया और अपनी जीवन शैली सब कुछ पश्चिमी सभ्यता के अनुकूल चलाने के लिए अग्रसर हो गया। इसके परिणामस्वरूप भारतीय लोगों ने अपनी भाषा, साहित्य, वेशभूषा, खान–पान और रहन–सहन भी मुगलों की तरह कर लिया। भारतीय समाज पर मुगलों की संस्कृति, शिक्षा और संस्कार पर गहरा आघात हुआ। लोगों के व्यवहार में भी परिवर्तन होने लगा। जहाँ पर भाई भाई के लिए प्राण न्यौछावर करते थे, वहीं पर एक दूसरे की जान लेने के लिए आतुर घूमने लगा। विदेशी शिक्षा ने हमारे सभी संस्कारों को गौण बना दिया था। केवल और केवल स्वार्थ की ही शिक्षा का केन्द्र रह गया था। मानवीय मूल्यों का पूर्णतः ह्रास हो चुका था। बहुत ही अल्प समय में भारतीय समाज से मानवता समाप्त हो गयी।

''मधुतिष्ठति जिव्हाग्रे हृदये तु हलाहलम'' जैसे भाव समाज में व्यक्त होने लगे। भारतीय समाज की यह स्थिति विदेशी आक्रांताओं के भय, क्रूर व्यवहार और अमानवीय कृत्यों के कारण हुआ। भारतीय समाजपूर्ण रूप से उनके चंगुल में आ चुका था और अपने सभी कृतकार्यों को भूलकर प्राण रक्षा हेतु उनका चाटुकार

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

हो गया। भारतीय लोग भारतीयता का ही विरोध करने लगे। परिणामतः भारतीय समाज से स्वदेशी का लोप हो गया।

तत्कालीन भारतीय समाज के स्थानीय मुद्दे

एक लम्बे कालखण्ड तक मुगलों और अंग्रेजों के पराधीन रहने के कारण भारतीय समाज अपनी पहचान भूल चुका था। भारतीय समाज अधिकांश विदेशी आक्रांताओं की संस्कृति, साहित्य और भाषा अपनाने लगा था जिसका प्रभाव यह हुआ कि भारतीय समाज में कई कुरीतियों ने जन्म ले लिया। बाल विवाह, सती तप्रथा, रात्रिकालीन विवाह, मैला ढोने की प्रथा, जन्म दिवस पर केक काटने इत्यादि प्रथाओं का उदय हुआ। भारतीय समाज पर नयी–नयी रूढ़ियाँ थोपी गयीं और भारतीय समाज ने भय के वशीभूत होकर सभी को सहर्ष स्वीकार कर लिया। ***तत्कालीन पीढ़ी ने वर्तमान पीढ़ी पर आत्महीनता के रूप में देखने को मिला।*** जो समाज यज्ञ, हवन व नवीन अनुसंधान करता था, जिसका प्रौढ़ समाज वनों में नये–नये अन्वेषण करता था, वही समाज बहु विवाह और सन्तानोत्पत्ति में लग गया। अपने को भूल गया और अपने ही राष्ट्र में रहकर वह अपनी सभ्यता, संस्कृति व संस्कारों को भूल गया और भ्रमित होकर अनाकर्षक दिखने वाली सभ्यता के आगे घुटने टेक दिये। स्वयं पर अनास्था का परिणाम यह रहा कि ''आत्मनाश'' अर्थात अपने आदर्शों, अपनी सांस्कृतिक विरासत, अपने साहित्य और अपनी सम्पूर्ण चिंतन प्रणाली को, चाहे वह आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, साहित्यिक या कलात्मक हो, सभी का परित्याग करके उसके स्थान पर बाहरी चिंतन प्रणाली को प्रतिष्ठित किया। आज जो हमें वृद्धाश्रम, कॉन्वेन्ट स्कूल, एकांकी परिवार, पारिवारिक कलह दिखती है, वह सभी पाश्चात्य सभ्यता की देन है।

यदि हम अपने सभ्य समाज पर दृष्टि डालें तो देखते हैं कि हमारा सभ्य समाज फादर और चादर से ग्रस्त है। यह अपनी कामवासना को मिटाने के लिए किसी भी हद तक जा सकता है। युवा पीढ़ी पूर्णरूपेण इससे ग्रसित हो चुकी है। यह वही भारतीय समाज है जहाँ के राजा हरिश्चन्द्र ने स्वप्न में अपना राजपाट दान में दिया था, परन्तु निद्रा खुलने पर उसे विश्वामित्र को दान देकर तपस्या हेतु वन जाने लगे थे। यह वही भारतीय समाज है जहाँ पर प्रतिदिन बूढ़े माँ–बाप का मानमर्दन हो रहा है, स्त्रियां सतायी जा रही हैं। यह सभी समस्याएं तत्कालीन भारतीय समाज में परिलक्षित होती हैं।

वर्तमान समाज पर तत्कालीन मुद्दों का प्रभाव

हज़ारों वर्ष की पराधीनता के बाद हमारी संस्कृति, भाषा और स्वभाव में आमूलचूल परिवर्तन हुआ है जिसे हम स्वतंत्रता के लगभग 80 वर्षों बाद भी दूर नहीं कर पाये हैं। यूँ तो कोई संस्कृति या जीवन प्रणाली स्वयं में पूर्ण नहीं हुआ करती, या फिर पूर्णरूप से दोषहीन नहीं होती। हर संस्कृति अच्छे या बुरे घटों का मिश्रण हुआ करती है जहाँ लोग अपने राष्ट्र को प्रेम करते हैं, वह देश सदैव उन्नति करता है। परन्तु जहाँ के लोगों में स्व की भावना प्रबल होने लगती है, लोग आत्महीनता से ग्रसित हो जाते हैं उस देश की संस्कृति दुर्बल हो जाती है। यही दुर्बलता बाह्य संस्कृति को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। क्योंकि संस्कृति कोई भी हो, उसके उदात्त घटक तप और संयम की मांग करते हैं, श्रम और धैर्य की अपेक्षा करते हैं, साथ ही जिनका प्रभाव पराजित जनमानस का विशिष्ट गुण होता है। इस नये भारत ने विदेशी आक्रांताओं के डर से कुछ अच्छी बातों के साथ–साथ जिन आपात रमणीय बातों का निर्बाध आयात किया है, वे हैं हमारे वर्तमान पर अनास्था, अपने आदर्शों और जीवन प्रणाली के प्रति तुच्छता का भाव, भौतिक समृद्धि पर

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

ललक भरी दृष्टि, वर्जनाहीन समाज के प्रति आदर, अहं की भावना, उचितानुचित का विचार किये बिना किसी भी साधन से साध्य की प्राप्ति का प्रयत्न, अधैर्य, असहनशीलता और असंयमयुक्त भोगवृत्ति। जो वर्तमान समाज या यह कहें कि युवा पीढ़ी के मन मस्तिष्क पर पूर्ण रूप से राज कर रहा है जिसके परिणामस्वरूप युवा पीढ़ी स्वार्थी, असंस्कारी, अमर्यादित और भविष्यदृष्टि से शून्य हो चुकी है।

शिक्षा और मूल्य

आज का भारतीय समाज अपने खोये हुए सामाजिक व जीवन मूल्यों की खोज कर रहा है। आज जो शिक्षाशास्त्री एवं विचारक सामाजिक और जीवन के मूल्यों को खोज रहे हैं, उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए कि भारत के नैतिक अवमूल्यन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनकी भी दायित्व है।

तब भारतीय विचारकों को क्या करना चाहिए? यह एक अनुत्तरित प्रश्न है क्योंकि नैतिक मूल्यों की जानकारी और उनका अनौपचारिक रूप से शिक्षण बहुत ही आवश्यक है। किन्तु केवल यह सोच लेने से उदात्त जीवन की संरचना पर्याप्त नहीं होगी। आदर्शों और मूल्यों का सहज ज्ञान प्रत्येक नागरिक को होता है। काफी समय व श्रम के पश्चात शोधार्थी निष्कर्ष पर पहुँचते हैं जो भारतीय जनमानस को युगों–युगों से ज्ञात है। हाँ यह सत्यता है कि भारतीय समाज उनका वैज्ञानिक विश्लेषण या सूक्ष्म व्याख्या करने में असमर्थ रहा। किन्तु जीवन में कई बार हमें ऐसे अवसर प्राप्त होते हैं जब उनके प्रयोग एवं गहन विश्लेषण की मांग होती है। मुख्य समस्या तो उसके कार्यान्वयन की, उन्हें व्यवहार में उतारने की है। जब हमारे नैतिक मूल्य सही होंगे, तो समाज और राष्ट्र स्वयं ही गतिशील होंगे। जब हमारे नैतिक मूल्य स्वराष्ट्र–परराष्ट्र नीति, उत्पादन–वितरण प्रणाली यदि मूल्यपरक हो, तो मानवीय गरिमा और सामाजिक न्याय पर प्रतिष्ठित हो, तो नैतिक मूल्यों का संकट स्वयं ही दूर हो जायेगा।

उच्च शिक्षा में स्वदेशीकरण

वैदिक कालीन शिक्षा का समय 2500 ईसा पूर्व से 500 ईसा पूर्व तक का माना जाता है जिसे हम सहजता की दृष्टि से दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। पूर्व वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल। भारतीय शिक्षा की पहचान वैदिक शिक्षा ही है जो भारतीय संस्कृति की पहचान कराती है। जो शिक्षा हमें हमारे आदर्शों पर चलाते हुए हज़ारों वर्षों की गुलामी के बाद आज भी संस्कारों को जीवित रखे हुए है उसका कारण केवल हमारी वैदिक कालीन शिक्षा ही है जो बालकों को गुरुकुलों में समाज की आवश्यकतानुसार प्रदान की जाती थी। गुरुकुलों से निकले हुए शिष्य समाज की सभी आवश्यकताओं की भी पूर्ति करते थे। ये प्रतिभाएं उन्नत राष्ट्र के निर्माण की दिशा में कार्य करती थीं। परन्तु मुगलों और अंग्रेज़ों के आगमन के पश्चात इन प्रतिभाओं का पलायन शुरू हो गया। ये प्रतिभाएं पाश्चात्य सभ्यता और अर्थ के लिए लोलुप होने लगीं जिससे भारतीय समाज में अच्छी सोच के लोगों की कमी होने लगी जिसका परिणाम सामाजिक विखण्डन के रूप में दिखने लगा।

प्राचीन भाषाओं में जो आचार संहिताएं और व्यवहार नीति के ग्रन्थ मिले वह बड़े–बड़े विद्वानों के मार्गदर्शन में तैयार किये गये थे। गुरुकुल पद्धति का समर्थन करने वाले स्वामी दयानन्द सरस्वती से लेकर रवीन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी, आचार्य गिज्जुभाई तक सभी महापुरुष जो स्वदेशी शिक्षा को नया स्वरूप देने के लिए प्रयासरत थे। इन्होंने शिक्षा के स्वदेशीकरण की वकालत की था मानवीय गुणों और आदर्शों,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

सैद्धान्तिक और व्यवहारिक पक्षों पर भी बल दिया, केवल बौद्धिक या उपदेशात्मक पक्ष का समर्थन नहीं किया। इसका परिणाम यह रहा कि इतने संघर्षों के बाद भी भारतीय शिक्षा जीवित रही। वर्तमान शिक्षा के स्वरूप में कुछ बदलाव करके हमें इस शिक्षा का पूर्ण रूप से स्वदेशीकरण करना चाहिए, क्योंकि 1705 में न्यूटन ने बताया कि गुरुत्वाकर्षण के कारण कोई भी वस्तु पृथ्वी की ओर खिंची चली आती है। तो क्या इसके पहले वह वस्तु आकाश में चली जाती थी? यह सब वामपंथियों की देन है। आदिकाल से भारतीय शिक्षा चरमोत्कर्ष पर रही है। यहाँ का धर्म, अध्यात्म, विज्ञान हमेशा समृद्ध रहा है। आज विज्ञान व चिकित्सा विज्ञान ने IVF पद्धति खोजी है जबकि भारतीय विज्ञान परम्परा में राम सहित चारों भाइयों का जन्म अग्नि से उत्पन्न खीर से हुआ। सीता का जन्म भूमि से हुआ। पाँचों पाण्डवों का जन्म मन्त्रों के आवाहन से हुआ। वैदिक कालीन शिक्षा आधुनिक शिक्षा से कई गुना समृद्ध व शक्तिशाली थी।

अतः वर्तमान शिक्षा के स्थान पर हम पूर्ण रूप से स्वदेशी शिक्षा लागू करे तो फिर योग्य व्यक्तियों का पलायन रुकेगा। साथ ही साथ भारतीय समाज पूर्ण रूप से संस्कारयुक्त होगा।

स्वदेशी शिक्षा के वर्तमान उद्देश्य

वर्तमान समय में भारतीय समाज समय के ऐसे मुहाने पर खड़ा है, जहाँ पर सिर्फ और सिर्फ अर्थ और स्व की भावना ही शेष बची है। माता–पिता ही ईश्वर हैं। ऐसे देश में यह स्थिति पाश्चात्य सभ्यता की देन है। इस स्थिति को देखते हुए भारत में पूर्ण रूप से स्वदेशी शिक्षा को लागू कर निम्न उद्देश्य तय करने चाहिए।

1. ज्ञान व अनुभव पर बल

शिक्षा पुस्तकीय न होकर, शिक्षा ज्ञान व अनुभव पर बल देने वाली होनी चाहिए, जिससे सिर्फ रटने की बजाय उसे जीवन में मूलरूप से उतारें व उसका जीवन में प्रयोग करें।

2. चित्त की वृत्तियों पर बल

शिक्षा चित्त की वृत्तियों को आनन्दित कराने वाली नहीं, बल्कि समस्त परिस्थितियों में बालक को संयमित व नियंत्रित करने वाली होनी चाहिए जिससे बालक का चतुर्मुखी विकास हो।

शिक्षा में धर्म की शिक्षा का स्थान देना

वर्तमान समय में पाश्चात्य शिक्षा ने भारतीय धर्म का लोप सा कर दिया है। अस्तु शिक्षा में धर्म का प्रवेश होना चाहिए, जिससे बालक किसी भी प्रकार के अपराध करने में उसे डर लगे और वह किसी भी प्रकार का अपराध करने में दस बार सोचे।

3. चरित्र व नैतिकता का निर्माण

वर्तमान में प्रदान की जाने वाली शिक्षा में किसी भी प्रकार से चरित्र व नैतिकता के निर्माण पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है जिससे भारतीय सभ्यता का लोप हो चुका है। यदि हम स्वदेशी शिक्षा प्रदान करेंगे तो फिर बालक में चरित्र व नैतिक विकास होगा।

4. व्यक्तित्व का विकास

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

वर्तमान समय में उद्योगों का विकास चरम पर है, जिसके परिणामस्वरूप मानव का क्रियाकलाप भी मशीनों जैसे हो गये हैं। व्यक्तित्व का विकास रुक सा गया है, जिसे पुनः हमें विकसित करना होगा।

5. सामाजिकता का विकास

मानव आज आधुनिकता की चकाचौंध में फँस गया है जिससे सामाजिक दायित्व शून्य हो गये हैं जिन्हें पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता है।

6. राष्ट्रीयता का विकास

सभी धर्मों का केन्द्रीय भाव है कि मानव दूसरे धर्म, सम्प्रदाय या सिद्धांतों से सहमत हों। हमें बालक में राष्ट्रीयता को जाग्रत कर उसे राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय मूल्य से अवगत करना चाहिए।

आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी का प्रभाव

आधुनिकता से ग्रसित भ्रामक ..... तथा विज्ञान और तकनीकी के क्षुद्र विकास एवं तज्जन्य व्यापक औद्योगिक प्रचार ने हमारी नैतिक मान्यताओं एवं मूल्यों के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया है। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में हमारे नैतिक मूल्यों को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। यह समय समाज के लिए एक सन्धिकाल है। आदिकाल के नैतिक एवं सामाजिक मूल्य समाप्त हो रहे हैं, परन्तु नये मूल्य अभी स्थापित नहीं हो पाये हैं जिन्हें व्यवहार में उतारा जा सके। हमारी स्वदेशी शिक्षा के मूल्यों में परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारक बहुत से हैं। क्योंकि खेत–खलिहान का स्थान कारखानों ने ले लिया है,घरों के स्थान पर नगर बस गये और नगरों के स्थान पर सड़कें हो गयी हैं। हमें आने वाली पीढ़ी के मनोभावों को समझना चाहिए क्योंकि उनकी जीवनचर्या और समस्याएं नई एवं भिन्न हैं। औद्योगिक क्रान्ति के कारण उनके रीति रिवाज़, पहनावा, कार्यशैली, धर्माचरण आदि में परिवर्तन हुआ है। पुरानी मान्यताओं के आधार पर इनका मूल्यांकन करना भी अनैतिक कार्य होगा।

विज्ञान ने मानव का विकास भौतिक रूप से तो किया है परन्तु हार्दिक रूप से विकसित नहीं किया है। आज मानव की क्रियाशीलता तो बढ़ी है, परन्तु उसकी चेतना शून्य हुई है। उसके सामाजिक आचार–विचार यन्त्रवत होते जा रहे हैं और आत्मीयता का अभाव दिखाई दे रहा है।

वर्तमान समय के अनुसार स्वदेशीकरण का मूल्यांकन

अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि हमारे शैक्षिक मूल्यों के विघटन के लिए आधुनिकता बहुत हद तक उत्तरदायी है। यहाँ पर इसके कारण स्पष्ट किये जा चुके हैं। आधुनिक युग के साथ ही तीव्र संचार माध्यमों ने सम्पूर्ण विश्व को एक केन्द्र में स्थापित कर दिया है जिससे बाह्य संवाद सुगम हो गया है पर आत्मीयता का सर्वदा अभाव हो गया है। आदिकाल के समाज में सहयोग, निष्ठा, सम्बन्धियों एवं पड़ोसियों से प्रेम सम्बन्ध जैसे मूल्यों का बहुत महत्व था, किन्तु आज सब आत्मनिर्भर और आत्मकेन्द्रित हो गये हैं जिसके कारण लोगों के बीच आपसी सम्बन्ध इस आधुनिकता ने समाप्त कर दिये हैं। यदि आधुनिक समाज ने आत्मानुशासन के मूल्य को सावधानीपूर्वक आत्मसात किया होता तो सम्भवतः मूल्यों व स्वदेशी शिक्षा का इस सीमा तक विघटन न हुआ होता। आत्मानुशासन वर्तमान शिक्षा की सबसे बड़ी मांग है क्योंकि यही मूल्य हमें अपने अधिकारों के साथ ही दूसरों के अधिकारों के प्रति भी आदर व्यक्त करना सिखाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 04, April 2025

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

- गुप्त, नत्थूलाल, मूल्यपरक शिक्षा और समाज, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010, पृ.सं. 41.
- गुप्ता, डॉ० एस.एन., आर्थिक विचारों का इतिहास, आगरा पब्लिकेशन्स, आगरा, 2014, पृ.सं. 119.
- ओड़, प्रो० एल.के., शैक्षिक प्रशासन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2019, पृ.सं. 231.
- मदान, पूनम, पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया, अग्रवाल ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन्स, आगरा, 2020, पृ.सं. 89.
- श्रीवास्तव, डी.एन., जनसंख्या शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2014, पृ.सं. 157.
- सुखिया, एस.पी., शैक्षिक नेतृत्व एवं प्रबन्धन, श्री विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2017, पृ.सं. 167.
- तिवारी, डॉ० ओम शंकर, विद्यालय नेतृत्व एवं प्रबन्धन, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2022, पृ.सं. 93.
- उपाध्याय, राधा वल्लभ, शिक्षा में निर्देशन एवं परामर्श की भूमिका, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा, 2015, पृ.सं. 191.
- कुलश्रेष्ठ, एस.पी., शिक्षा के तकनीकी परिप्रेक्ष्य, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2023, पृ.सं. 81.
- तिवारी, शालिनी, समावेशी शिक्षा, ठाकुर पब्लिकेशन्स प्रा०लि० लखनऊ, 2022, पृ.सं. 63.
- शर्मा, डॉ० आभा, पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया, आर०लाल बुक डिपो, मेरठ, 2022, पृ.सं. 44.
- लाल, रमन बिहारी, शिक्षा के दार्शनिक परिप्रेक्ष्य, आर० लाल बुक डिपो, मेरठ, 2021, पृ.सं. 159.
- मिश्रा, डॉ० रत्नर्त्तुः, पर्यावरण शिक्षा, आर० लाल बुक डिपो मेरठ, 2022, पृ.सं. 69.
- सिंह, विपिन कुमार, विद्यालय प्रबन्धन एवं नेतृत्व, अग्रवाल ग्रुप ऑफ पब्लिकेशन्स, 2021, पृ.सं. 161.